कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

अपनों को अपनाओ, होगा विकास भारत का।
वनवासी-जनजाति से है, गौरव भारत का।।
गैरिक-श्वेत-हरित रंगों से, स्नेह-सुधा बरसेगी।
भारत की सभ्यता-संस्कृति, विश्व-पटल पहुँचेगी।।

परिवारों में संस्कार निर्माण और संरक्षण

मृदुलकान्त जी के भाषण के हर अक्षर से प्रेम बहे;
परिवारों में संस्कारों की नींव सदा मजबूत रहे।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 35, अंक 2
अप्रैल-सितम्बर 2024 (विक्रम संवत् 2081)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

-:सह सम्पादक:-
डॉ. रंजना त्रिपाठी

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गाँधी रोड, बाँगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता-7
दूरभाष : 2268 0962, 4803 4533

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय...जनजातीय समाज के... 2
- श्रीराम वन में गये तो बन गये 3
- संस्कार संप्रेषण की प्रयोगशाला... 6
- उड़ीसा में हिन्दू जागरण... 7
- जनजातियों के लिए तो जीवंत... 8
- देश को विकास पथ पर अग्रसर... 10
- सिलाई प्रशिक्षण एक नए... 11
- विभिन्न कार्यकर्ता पुरस्कारों से... 11
- न्यूज़ 18 द्वारा अचम्मा जी का... 11
- नैपुण्य शिविर 12
- नैपुण्य शिविर में जाना हम... 12
- सिंधारा उत्सव 13
- प्रेम और एकता का... 14
- राखी मेला 2024 14
- अनुकरणीय 15
- बोधकथा..परोपकार 16
- कविता ...वनवासी के बीच राम 16

संपादकीय...

जनजातीय समाज के विकास के बिना विकसित भारत की कल्पना अधूरी है

वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की संकल्पना की जा रही है। प्रश्न है कि क्या विकसित राष्ट्र का अर्थ मात्र आर्थिक प्रगति ही है। वस्तुत: विकास की धारणा बहुत अधिक व्यापक है। विकसित राष्ट्र की अवधारणा तब तक सार्थक नहीं है जब तक प्रत्येक नागरिक इस विकास की धारा में स्वयं को अभिन्न अंग मानते हुए अपना योगदान न दे। जैसे स्वास्थ्य की परिभाषा में व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी बल दिया जाता है ठीक इसी प्रकार विकसित राष्ट्र की संकल्पना में व्यक्ति या समाज, अर्थव्यवस्था, आधारभूत संरचना एवं पर्यावरण सभी का समेकित रूप से विकसित होना जरूरी है। इनमें से कोई भी एक अवयव कमजोर होने पर विकास अधूरा रह जाता है।

बेशक इन 10 सालों में विकास के कई मोर्चों पर काम हुआ है। देश हर क्षेत्र में निरन्तर प्रगति कर रहा है। कूटनीतिक मोर्चे पर भारत की धाक बढी है, भारत की वैश्विक मान्यता बढ़ रही है। हमारे वैज्ञानिक अंतरिक्ष में और खिलाड़ी ओलंपिक में परचम फहरा रहे हैं। दुनिया के हर कोने में भारतीय अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं। दुनिया की युवा आबादी का लगभग 20 फीसदी भारत में है जिससे देश के पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को शीघ्र ही प्राप्त किया जा सकता है। इन तमाम उपलब्धियों के साथ जब हम आजादी का जश्न मनाते हैं तो एक तरह से इस विशाल देश के नागरिक होने के गौरव का उत्सव भी मानते हैं। किन्तु इन उपलब्धियाँ के बावजूत आज भी कई सवाल खड़े होते हैं। सवाल यह है कि जिस देश में पिता की संपत्ति में बेटियों को बराबरी का हक मिला वहां बेटियां आखिर क्यों यौन हिंसा का शिकार हो जाती हैं? प्रेम और भाईचारा का दुनिया को संदेश देने वाले इस देश में मनुष्यता को शर्मसार वाली घटनाएं आज भी क्यों होती है? क्या प्रकृति के संरक्षक और सांस्कृतिक मूल्यों के संवाहक 12 करोड़ के जनजातीय समाज का सर्वांगीण विकास हो पाया है? गाँव में सड़क, पानी, बिजली, शिक्षा व चिकित्सा जैसे मूलभूत सुविधाओं की कमी क्यों बड़ी आबादी को शहरों की ओर पलायन करने को मजबूर करती है? और बड़ा सवाल यह भी है कि क्या हम सचमुच अपने वनवासी बंधुओं के साथ एकात्मता का अनुभव करते हैं? आजादी का जश्न मनाना तब ही सार्थक होगा जब हम एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपने दायित्वों का निर्वहन करें और सदियों से पीड़ित वनवासी समाज को मुख्य धारा में सम्मिलित करने को संकल्पित हों। विकसित भारत का लक्ष्य पाने के लिए वनवासी समाज का सर्वांङ्गीण विकास जरूरी है।

विकसित भारत की संकल्पनाओं को पूरा करने के लिए स्व से ऊपर उठकर कार्य करने की आवश्यकता है। **तू-मैं एक रक्त** के मंत्र को चरितार्थ करते हुए राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए आगे बढ़ना चाहिए। इति शुभम्।

- स्नेहलता बैद

श्रीराम वन में गये तो बन गये

प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रंथों में 'रामायण' जनमानस में सबसे ज्यादा लोकप्रिय ग्रंथ है। भारत के सामंत और वर्तमान संवैधानिक भारतीय लोकतंत्र में राम के आदर्श मूल्य और रामराज्य की परिकल्पना प्रकट अथवा अप्रगट रूप में हमेशा मौजूद रही है। अतएव रामायण कालीन मूल्यों ने भारतीय जन-मानस को सबसे ज्यादा उद्वेलित किया है। इस जन-समुदाय में रामकथाओं में उल्लेखित वे सब वनवासी जातियाँ भी शामिल हैं, जिन्हें वानर, भालू, गिद्ध, गरुड़ भील, कोल, नाग इत्यादि कहा गया है। यह सौ प्रतिशत सच्चाई है कि ये लोग वन-पशु नहीं थे। इसके उलट वन-प्रांतों में रहने वाले ऐसे विलक्षण समुदाय थे, जिनकी निर्भरता प्रकृति पर अवलंबित थी। उस कालखंड में इनमें से अधिकांश समूह वृक्षों की शाखाओं, पर्वतों की गुफाओं या फिर पर्वत शिखरों की कंदराओं में रहते थे। ये अर्धनग्न अवस्था में रहते थे और रक्षा के लिए पत्थर और लकड़ियों का प्रयोग करते थे। इसलिए इन्हें जंगली प्राणी का संबोधन कथित सभ्य समाज करने लगा। अलबत्ता सच्चाई है कि राम को मिले चौदह वर्षीय वनवास के कठिन समय में ये जंगली मान लिए गये। वनवासी समूह राम-सीता एवं लक्ष्मण के जीवन में नहीं आए होते तो राम की आज जो पहचान है, वह संभव नहीं थी। राम ने लंका पर विजय इन्हीं वनवासियों के बूते पाई। जिन वन्य-प्राणियों के नाम से इन वनवासियों को रामायण काल में चिन्हित किया गया है, संभव है, ये लोग अपने समूहों की पहचान के लिए उपरोक्त प्राणियों के मुख के मुखौटे धारण करते हों।

रामायण में वनवासियों की महिमा का प्रदर्शन बालकांड से ही आरंभ हो जाता है। राजा दशरथ के साढू अंग देश के राजा लोमपाद हैं। संतान नहीं होने पर दशरथ, पत्नी कौशल्या से जन्मी पुत्री शांता को बाल्यावस्था में ही लोमपाद को गोद दे देते हैं। अंगदेश में जब भयंकर सूखा पड़ा, तब वनवासी ऋषि ऋष्यश्रृंग को बुलाया जाता है। ऋषि विभाण्डक के पुत्र श्रृंगी अंगदेश में पहुंचकर यज्ञ के माध्यम से वर्षा के उपाय करते हैं। अंततः मूसलधार बारिश हो जाती है। उनकी इस अनुकंपा से प्रसन्न होकर लोमपाद अपनी दत्तक पुत्री शांता का विवाह श्रृंगी से कर देते हैं। कालांतर में जब दशरथ को अपनी तीनों रानियों कौशल्या, कैकई और सुमित्रा से कोई संतान नहीं हुई, तब बूढ़े दशरथ चिंतित हुए। मंत्री सुमन्त्र से ज्ञात हुआ कि श्रृंगी पुत्रेष्टि यज्ञ में दक्ष हैं। तब मुनि वशिष्ठ से सलाह के बाद श्रृंगी ऋषि को अयोध्या आमंत्रित किया। ऋष्यश्रृंग ने यज्ञ के प्रतिफल स्वरूप जो खीर तैयार की उसे तीनों रानियों को खिलाया। तत्पश्चात कौसल्या से राम, कैकई से भरत और सुमित्रा की कोख से लक्ष्मण व शत्रुघ्न का जन्म हुआ। इस प्रसंग

से यह तथ्य प्रमाणित होता है कि वनवासियों में महातपस्वी ऐसे ऋषि भी थे जो कृत्रिम वर्षा और गर्भधारण चिकित्सा विधियों के जानकार थे।

राम को वनगमन के बाद पहला साथ निषादराज गुह का मिलता है। प्रयागराज के पास स्थित श्रृंगवेरपुर से निषाद राज्य की सीमा शुरू होती है। निषादराज को जब राम के आगमन की खबर मिलती है तो वे स्वयं राम की अगवानी के लिए पहुँचते हैं। हालांकि निषाद वनवासी नहीं है, लेकिन वे मल्लाह मानी जाने वाली जातियों के समूह में हैं, जिन्हें ढीमर, ढीबर, मछुआरा और बाथम कहा गया है। निषाद लोग शिल्पकार थे। उत्कृष्ट नावें और जहाजों के निर्माण में ये निपुण थे। निषाद के पास पांच सौ नौकाओं का बेड़ा उपलब्ध होने के साथ यथेष्ट सैन्य-शक्ति भी मौजूद थी। जब राम को वापस अयोध्या ले जाने की भरत की इच्छा पर संदेह होता है तो निषाद राम-लक्ष्मण की रक्षा का भरोसा अपनी सेना के बूते जताते हैं। किंतु राम अपने भ्राता पर अटूट विश्वास करते हुए कुशंकाओं का पटाक्षेप कर देते हैं। भरत-मिलन के बाद निषाद ही अपनी नौका पर राम, लक्ष्मण और सीता को बिठाकर गंगा पार कराते हैं। निषादराज गुह ऐसे पहले व्यक्ति थे, जो राम को कौशल राज्य की सीमाओं के बाहर सुरक्षा का भरोसा देते हैं।

हालांकि राम के आगे बढ़ते जाने के साथ उनसे अत्रि, वाल्मीकि, भरद्वाज, अगस्त्य, शरभंग, सुतीक्ष्ण, माण्डकणि और मतंग ऋषि मिले। नि:संदेह वनवासियों के बीच वन-खंडों में रहने वाले इन ऋषियों ने ही राम का मार्ग प्रशस्त किया। ऋषियों की जो वेधशालांएं, अग्निशालाएं और आश्रम थे, उन पर राक्षस तो आक्रमण करते हैं, लेकिन वनवासियों ने किसी ऋषि को कष्ट पहुंचाया हो, ऐसा रामकथा में ही नहीं, अन्य रामायणों में भी उल्लेख नहीं मिलता। यहाँ प्रश्न खड़ा होता है कि ऋषि जब वन-खंडों में अपनी गतिविधियों को संचालित करते थे तो उनका संरक्षण और सहयोग कौन कर रहे थे? उनकी वेधशालाओं में अस्त्र-शस्त्रों के शोध व निर्माण में सहयोगी कौन थे? वे उन आश्रमों में किसे शिक्षित कर रहे थे? जबकि उन आश्रमों के आस-पास ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य जातियाँ रह ही नहीं रही थीं? स्पष्ट है, ऋषि अनार्यों अर्थात राक्षसों से लुक-छिपकर एक तो वनवासियों के एकत्रीकरण में लगे थे, दूसरे वनवासियों को ही शिक्षित व दीक्षित कर रहे थे।

राम से पहले दक्षिण के वनांचलों में धूल छान रहे ऋषियों का वनवासियों से संघर्ष नहीं है, इससे यह संदेश स्पष्ट है कि ऋषि इन जंगलों में इन जातियों के बीच रहकर उन्हें सनातन हिंदू धर्म के सूत्र में पिरोने और उनके कल्याण में संलग्न थे। यह दृष्टिकोण इसलिए भी समीचीन है क्योंकि इस ओर लंकापति रावण की निगाहें थीं और वह इन जातियों को शूर्पनखा, खर व दूषण के माध्यम से रक्ष संस्कृति अर्थात अनार्य संस्कृति में ढालने में लगा था। राम अनार्य संस्कृति के विस्तार में बाधा बनें, इस दृष्टि से ही अगस्त्य राम को पंचवटी में भेजते हैं और पर्ण-कुटी बनाकर वहीं रहने की सलाह देते हैं। यहीं से राम वनगमन में ऐतिहासिक मोड़ आता है। राम को जब पता चलता है कि शूर्पणखा का पुत्र शंबूक 'सूर्यहास-खंग' नामक विध्वंसक शस्त्र का निर्माण कर रहा है तो राम लक्ष्मण को भेजकर शंबूक को मरवा देते हैं। शंबूक इसलिए दानव या वनवासी कहा गया है, क्योंकि शूर्पनखा का विवाह दानव

कालिका के पुत्र विद्युतजिव्ह से हुआ था। रावण जब दिग्विजय पर निकला था, तब उसने कालकेय दानवों के राजा अश्मनार पर हमला बोला था। विद्युतजिव्ह कालकेयों के पक्ष में लड़ा। रावण ने रणोन्मत्त होकर कालकेयों को तो परास्त किया ही, विद्युतजिव्ह का भी वध कर दिया।

इस समय शूर्पनखा गर्भवती थी। रावण को अपने किए पर पश्चाताप होता है। शूर्पनखा भी उसे भला-बुरा कहती है। अंततोगत्तवा रावण शूर्पनखा को त्रिशिरा के साथ भेजकर दण्डकवन की अधिष्ठात्री बना देता है। इस क्षेत्र में खर और दूषण पहले से ही तैनात थे। इसी दण्डकवन क्षेत्र में राम ने पंचवटी का निर्माण किया था। पंचवटी के निर्माण पर शूर्पनखा को आपत्ति थी। इसी विरोध का परिणाम शंबूक-वध और शूर्पनखा के अंग-भंग के रूप में सामने आया। बाद में जब रावण को इन घटनाओं की खबर लगी तो वह छद्म-बेश में सीता का हरण कर ले जाता है। जटायु ने जब एक स्त्री को बलात् रावण द्वारा ले जाते हुए देखा तो उसने पुष्पक विमान पर सवार रावण पर हमला बोल दिया। हालांकि जटायु मारा गया। लेकिन जटायु ऐसा पहला वनवासी था, जिसने अनभिज्ञ स्त्री सीता की प्राण रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया था। संभवत: यह पहला अवसर था, जहां से राम और वनवासी जातियों के बीच परस्पर रक्षा में आहुति देने का व्यवहार पनपा।

जटायु के बाद वनवासी महिला शबरी ने राम को सुग्रीव के पास भेजा। यहीं राम शबरी की भावना का आदर करते हुए उसके जूठे बेर भी चाव से खाते हैं। वाल्मीकि रामायण से इतर रामायणों में तो यहां तक जानकारी मिलती है कि शबरी लंका की गुप्तचर होने के साथ विभीषण की विश्वसनीय थी। इस मुलाकत के दौरान वह राम को विभीषण का एक संदेश भी देती है। इस संदेश से सीता के लंका में होने की पुष्टि होती है। इन घटनाक्रमों के बाद राम और सुग्रीव की वह मित्रता है, जो राम को रावण से युद्ध का धरातल देती है। सुग्रीव वनवासियों की उपप्रजाति वानर से है। बालि सुग्रीव का सगा भाई है, जो किष्किंधा राज्य का सम्राट है। बालि ने सुग्रीव को किष्किंधा से निष्कासित कर उसकी पत्नी रूमा को भी अपनी सहचारिणी बना लिया है। बालि इतना शक्तिशाली है कि रावण भी उससे पराजित हो चुका है। इसके बाद दोनों में मित्रता कायम हुई और एक-दूसरे के सहयोगी बन गए। राम बालि की ताकत से परिचित थे। तत्पश्चात भी उन्होंने अपेक्षाकृत कमजोर सुग्रीव से मित्रता की, क्योंकि बालि शक्ति का भय दिखाकर शासन चला रहा था। इस कारण अनेक वानर किष्किंधा से पलायन कर गए थे। राम ने उदारता दिखाते हुए पहले बालि को मारा और फिर सुग्रीव को किष्किंधा के राज-सिंहासन पर बिठाया। तत्पश्चात अपने हित यानी सीता की खोज में जुट जाने की बात कही। बालि की मृत्यु और राम व सुग्रीव की मित्रता की जानकारी फैलने के बाद वे वानर किष्किंधा लौट आए, जो बालि के भय से भाग गए थे। यहीं से राम को जामवंत, हनुमान, नल, नील, अंगद, तार और सुषेण का साथ मिला। इनमें हनुमान तीक्ष्ण बुद्धि होने के साथ दुभाषिये भी थे। सीता की खोज में वानरों की मदद स्वयंप्रभा नाम की एक वनवासी तपस्विनी और गंधमादन पर्वत पर रहने वाले संपाती और उसका पुत्र सुपाश्रव भी करते हैं। कह सकते हैं कि प्रभु श्रीराम को अपने जीवनकाल में कदम-कदम पर वनवासियों का सहयोग मिला।

संकलन : डॉ. रंजना त्रिपाठी, कार्यकर्ता, अलीपुर समिति ■

संस्कार संप्रेषण की प्रयोगशाला है परिवार

- उमा गोयल, सह संगठन मंत्री, महानगर महिला समिति

परिवार शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'फैमिलिया' से उत्पन्न हुआ है। यह एक घरेलू संस्था को दर्शाता है। इसका तात्पर्य है 'अपने जीवनकाल के महत्वपूर्ण चरणों के दौरान एक साथ रहने वाले तथा जैविक और/या सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक संबंधों द्वारा एक-दूसरे से जुड़े हुए व्यक्तियों का समूह'। परिवार व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।यह न केवल हमारे जीवन का मूल आधार होता है, बल्कि हमें सहारा और समर्थन भी प्रदान करता है। परिवार हमें प्यार, सम्मान, और संबंधों की मूल्यवान शिक्षा देता है। वहाँ हम सीखते हैं कि कैसे संघर्षों का सामना करें, साझेदारी में रहें, और एक-दूसरे के प्रति समर्पित रहें।

भारत वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा में विश्वास करने वाला देश है। भारत में पारंपरिक पारिवारिक संरचना का पालन होता रहा है। पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली के धीरे-धीरे लुप्त होने और एकल परिवारों के बढ़ने से आधुनिक भारत की पारिवारिक संरचना में परिवर्तन आने लगे। लोग स्वयं अपने जीवन साथी का चयन कर रहे हैं। बाल विवाह के मामलों में कमी आने के साथ-साथ विवाह की औसत आयु में भी वृद्धि होने लगी है। माता-पिता दोनों आर्थिक गतिविधि के लिए हमेशा घर से बाहर रह रहे हैं। बच्चे अपने दादा-दादी और नाना-नानी से दूर रहने को बाध्य हैं। परिवार टूटने लगे हैं। परिवार समाज की ईकाई है। इसलिए सामाजिक विसंगतियाँ भी बढ़ने लगी हैं। देश का विकास बिना स्वस्थ समाज के नहीं हो सकता। वर्तमान काल खंड में हम सभी के परिवारों में संस्कारों के संरक्षण एवं संवर्धन की विशेष आवश्यकता है।

इन्हीं विचारों के परिप्रेक्ष्य में हम सभी गृहस्थ कार्यकर्ताओं के हितार्थ 'परिवार में संस्कार संरक्षण एवं संवर्धन' विषय पर आदरणीय श्री मृदुल कांत जी शास्त्री के मार्गदर्शन का एक अति महत्वपूर्ण कार्यक्रम केशव भवन (RSS मुख्यालय) में 28 जुलाई 2024, रविवार के दिन सुबह 10:30 बजे सुन्दर कार्यक्रम आयोजित हुआ।

आपने बताया कि हमारा आचरण परिवार जनों के साथ भी मधुर व मुस्कुराहट भरा होना चाहिए जैसे कि हम बाहर वालों के साथ पेश आते हैं। घर में सभी को सम्मान मिले, मुख्यत: गृह लक्ष्मी को क्योंकि वह गृह-स्वामिनी है। और उसे भी अपना यह पद कोई नौकर-चाकर के हाथ में नहीं छोड़ देना चाहिए। जितना हो सके सब परिवार एक साथ भोजन तथा भजन करने का प्रयास करे। बच्चों के पसंद का भोजन बाहर से मंगवाने की जगह घर में ही बना कर देने का प्रयास करें। महीने में एक बार सब एक निश्चित समय (लगभग 45 मिनट) मीटिंग करें, जिसमें सभी को अपने विचार रखने की अनुमति हो। बच्चों को दादी-नानी के साथ

समय बिताने का मौका दें। प्रेरणापूर्ण तथा मूल्यपरक जीवन जीने के लिए सभी धार्मिक कथाएँ सुनें और सुनाएँ। दादी, नानी और माँ बच्चों को वे कहानियाँ सुनाएँ जिनमें घृणा के झोंके नहीं प्रेम की हिलोरे हों। ऐसे बच्चे जब बड़े होंगे तो बेहतर जीवन के लिये संघर्ष तो करेंगे पर किसी क्षणिक और भौतिक सुख के लिये पर पीड़ा का मार्ग कभी नहीं अपनाएँगे। बच्चे मोबाइल फोन तथा गूगल में क्या देखते तथा सुनते हैं, उस पर नजर रखते हुए बच्चों के भ्रम दूर करने की कोशिश करें। बदलते समय के साथ परिवार वाले मिल बाँटकर व कार्य करें।

हम भागते रहे माया के लिए हर जगह
सुख जो परिवार में है, वो मिलेगा कहाँ

आधुनिक विचारों तथा पारम्परिक मूल्यों और परम्पराओं का सामंजस्य स्थापित करने की महाराज श्री में अद्भुत क्षमता है। वनवासी सेवा कार्य महाराज श्री के मन को भी उतना ही प्रिय है जितना हम सभी कार्यकर्ताओं को। विभिन्न कथा आयोजनों में आप कल्याण आश्रम के कार्य तथा कार्यकर्ताओं के निस्वार्थ भाव का उल्लेख तथा समर्पित भाव की सराहना करते हैं। इससे हमारे कार्य को गति मिली है। समाज में जागरूकता भी आई है। महाराज श्री का पाथेय हम सभी को दिशा प्रदान करेगा। इस प्रकार छोटे-छोटे बिन्दुओं को अपनी झोली में समेटे हम सब एक नई दिशा और नया पाथेय लेकर घर लौटे। ■

अमृत वचन

दूसरे कोई जाने या न जाने, तुम अपने आचार को निर्मल रखो, तुम्हारा कल्याण हो जाएगा।

- आचार्य महाश्रमण

23 अगस्त बलिदान दिवस पर विशेष....

उड़ीसा में हिन्दू जागरण के अग्रदूत: स्वामी लक्ष्मणानंद

कंधमाल उड़ीसा का वनवासी बहुल पिछड़ा क्षेत्र है। पूरे देश की तरह वहां भी 23 अगस्त, 2008 को जन्माष्टमी पर्व मनाया जा रहा था। रात में लगभग 30-40 क्रूर चर्चवादियों ने फुलबनी जिले के तुमुडिबंध से तीन कि.मी. दूर स्थित जलेसपट्टा कन्याश्रम में हमला बोल दिया। 84 वर्षीय देवतातुल्य स्वामी लक्ष्मणानंद उस समय शौचालय में थे। हत्यारों ने दरवाजा तोड़कर पहले उन्हें गोली मारी और फिर कुल्हाड़ी से उनके शरीर के टुकड़े कर दिये।

स्वामी जी का जन्म ग्राम गुरुजंग, जिला तालचेर (उड़ीसा) में 1924 में हुआ था। वे गत 45 साल से वनवासियों के बीच चिकित्सालय, विद्यालय, छात्रावास, कन्याश्रम आदि प्रकल्पों के माध्यम से सेवा कार्य कर रहे थे। गृहस्थ और दो पुत्रों के पिता होने पर भी जब उन्हें अध्यात्म की भूख जगी, तो उन्होंने हिमालय में12 वर्ष तक कठोर साधना की; पर 1966 में प्रयाग कुंभ के समय संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी तथा अन्य कई श्रेष्ठ संतों के आग्रह पर उन्होंने 'नर सेवा, नारायण सेवा' को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। ■

जनजातियों के लिए तो जीवंत बिरसा मुंडा के समान थे जगदेव राम उरांव

- तरुण विजय, पूर्व राज्यसभा सांसद

राजनेताओं में अक्सर यह गलतफहमी हो जाती है कि वह अपने पद व पैसे के कारण बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। संस्कृत में कहावत भी है - 'सर्वे गुणा: काञ्चनमाश्रयन्ति'। अर्थात सभी गुण धन से चमकते हैं। गांव में हमारी दादी इसी बात को साधारण भाषा में सुनाती हैं - माया तेरे तीन नाम, परसा, परसु, परसराम। गरीब का नाम चाहे परसराम हो परन्तु उसे परसु ही पुकारते हैं। धन आ जाये तो परसु को भी परसराम जी कहने लग जाते हैं। पर सामाजिक जीवन में यह बात सत्य नहीं होती। देश के महानतम भाग्य विधाता वे थे जो शायद न कभी मंत्री बने, न विधायक और न ही सांसद।

सन 1995 में वे वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष बन गये थे ओर कुछ वर्षो में ही उनके नेतृत्व में पूरे देश के 14 हजार से अधिक गांवों में लगभग पांच सो जनजातियों के मध्य बीस हजार से अधिक सेवा के प्रकल्प चलने प्रारंभ हुए।

समाज के शिल्पी सत्ता और पद के मोहताज नहीं होते। ऐसे ही एक समाज शिल्पी थे जगदेव राम उरांव। इस देश में जनजातियों की काफी बड़ी संख्या है जो सम्पूर्ण भारतीय जनसंख्या का लगभग 11 प्रतिशत है। लेकिन भारत में आतंकवाद, विद्रोह और विदेशी धन पोषित षड्यंत्र यहाँ देखने को मिलता है। इनकी सघन उपस्थिति उत्तर पूर्वांचल के आठ राज्यों - उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़, आंध्र, तेलंगाना, हिमाचल, लद्दाख, उत्तराखंड व राजस्थान में है। जगदेव राम उरांव गत पांच दशकों से संपूर्ण भारत के जनजातीय समाज के स्कूल, कॉलेज, मेडिकल सेंटर, छात्रावास, सांस्कृतिक पुनर्जागरण केंद्र और आर्थिक सशक्तीकरण के प्रकल्प स्थापित कर रहे थे। वे स्वयं जशपुर के पास कोमोडो गांव के निवासी थे। उरांव जनजाति बहुत बहादुर, धर्मपरायण मानी जाती है पर जनजाति के बीच ईसाई मिशनरियों और अंग्रेजों की छाया तले इतनी ताकत के साथ विस्तार हुआ कि आजादी के बाद एक बार तत्कालीन मध्य भारत प्रांत के मुख्यमंत्री पंडित रविशंकर शुक्ल जब जशपुर क्षेत्र के दौरे पर आए तो ईसाई धर्मांतरित जनजातियों ने उनका विरोध कर उन्हें प्रवेश नहीं करने दिया।

उन्होंने महात्मा गांधी के सहयोगी ठक्कर बापा से चर्चा की। जो जनजातीय समाज में कार्य कर रहे थे। ठक्कर बापा ने कुछ काम शुरू किए तब बाला साहेब देशपांडे, जो उस समय जशपुर में वकील थे तथा स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय थे, ने जनजातीय आस्था और संस्कृति रक्षा

और उस पर मिशनरियों द्वारा धर्मांतरण का संताप देकर इस परिस्थिति से श्लुब्ध थे ही, वे 1968 में कल्याण आश्रम में आ गये। वे कल्याण आश्रम द्वारा संचालित विद्यालय में शिक्षक बन गये और जनजाति समाज के विकास के लिए दिन-रात काम करने लगे।

धीरे-धीरे वे संगठन में आगे बढ़े और देश भर की जनजातियों के बीच उन्हें काम बढ़ाने की जिम्मेदारी मिली। उनका सरल, सहज स्वभाव, उच्च शिक्षा और बिना कटुता पैदा किये हिम्मत के साथ जनजातियों को एक करने की क्षमता ने उन्हें लद्दाख से लेकर पोर्ट ब्लेयर (अण्डमान निकोबार द्वीप समूह) और तवांग से लेकर गुजरात के डांग और धरमपुर जेसे क्षेत्रों में लोकप्रिय बना दिया। बच्चों को पढ़ाओ, आगे बढ़ाओ खासकर जनजातियों की लड़कियों को, यही संदेश देते थे। उन्होंने जनजाति समाज को शिक्षा और आर्थिक स्वावलंबन के क्षेत्र में विशेष प्रोत्साहित किया। वनवासी कल्याण आश्रम ने नगालैंड़, मणिपुर, मिजोरम से लेकर केरल की पहाड़ियों और नक्सलवाद प्रभावित दंतेवाड़ा जेसे क्षेत्रों से अनेक जनजातीय युवतियों को डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक जैसे स्थानों तक पहुंचाने में कामयाबी हासिल को। अक्सर उत्तर-पूर्वांचल के बच्चे दिल्ली, मुंबई या महानगरों में जाते हैं तो उनके साथ नस्लीय भेदभाव की शिकायतें मिलती हैं। जगदेव राव उरांव के नेतृत्व में वनवासी कल्याण आश्रम देश का ऐसा अकेला संगठन बना जिसने जनजातीय युवाओं के साथ भेदभाव खत्म करने की लड़ाई लड़ी और हजारों उत्तर-पूर्वांचलीय युवक-युवतियां वनवासी कल्याण आश्रम की पहल के कारण आत्माभिमान के साथ समानता के व्यवहार ही नहीं पाते बल्कि देश के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अन्य शहरियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर योगदान दे रहे हैं।

सन 1995 में वे वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष बन गये थे और कुछ वर्षों में ही उनके नेतृत्व में पूरे देश के 14 हजार से अधिक गांवों में लगभग पांच सौ जनजातियों के मध्य बीस हजार से अधिक सेवा के प्रकल्प चलने प्रारंभ हुए। जहां तक सम्पर्क की बात हे तो वनवासी कल्याण आश्रम श्री जगदेव राम के नेतृत्व में पचास हजार से अधिक ग्रामों तक पहुँच चुका है जो अपने आप में एक विश्व कीर्तिमान है। चौदह हजार गांव तथा नगरीय क्षेत्रों में जनजातीय समाज के विकास के लिए बीस हजार प्रकल्प चल रहे हैं। उनमें कुल संख्या मिलायें तो लगभग तीन लाख से अधिक लोग सेवा, समर्पण और जनजातीय बंधुओं की सेवा के लिए सहभागी हो रहे हैं। यह कल्पना करना भी कठिन हे कि विदेशों से आने वाले अरबों डॉलर लेने वालों के सामने समाज से एकत्र किये जाने वाले धन के बल पर जनजातियों के लिए दुनिया का सबसे बड़ा संगठन भारत में खड़ा हो गया जो उनकी काया और मन की चिंता करता है तथा देशभक्ति के मार्ग से विकास के लक्ष्य तक ले जाता है।

ऐसे थे जगदेव राम उरांव जिनका 72 वर्ष की आयु में 15 जुलाई 2022 को देहांत हो गया। यह ठीक है कि देश में राजनेता, फिल्म अभिनेताओं को कदाचित राजकीय सम्मान से अंतिम संस्कार का अवसर मिल जाता है लेकिन जगदेव राम उरांव सामाजिक सम्मान के साथ इहलोक की यात्रा पूर्ण कर बैकुंठ धाम की ओर प्रस्थान कर गये। आज चार वर्ष होने आए हैं समाज को गढ़ने वाली यह हस्ती वास्तव में सैंकड़ों मंत्रियों, सांसदों से बड़े कहे जायेंगे। उनकी स्मृति को इसीलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी श्रद्धांजलि दी। शायद इस देश का शिक्षा विभाग किसी पाठ्यक्रम में जगदेव राम की संघर्ष यात्रा का पाठ न पढ़ाये लेकिन जनजातियों के लिए तो मानो वे जीवंत बिरसा मुंडा और ठक्कर बापा थे। ■

देश को विकास पथ पर अग्रसर करना है तो जात-पांत के भेदभाव से दूर रहें : विद्युत मुखर्जी

- विवेक चिरानिया, सह संगठन मंत्री, कोलकाता महानगर

कोलकाता, 12 मई। यह वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में पदार्पण का वर्ष है। सन् 2025 में विजयदशमी के दिन संघ अपनी 100 वर्ष की यात्रा पूरी कर रहा है। लोकसभा चुनाव और आने वाले संघ शताब्दी वर्ष को देखते हुए देश में लोकतंत्र और राष्ट्रीय एकता को अधिक मजबूत करने और जन-जन की सक्रियता बढ़ाने की दृष्टि से 12 मई को कोलकाता स्थित ज्ञान मंच सभागार में पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता हावड़ा महानगर द्वारा एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक विद्युत मुखर्जी और प्रख्यात साहित्यकार तारा दूगड़ ने संबोधित किया। समाज में व्यापक बदलाव लाने हेतु विद्युत मुखर्जी ने सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, कुटुम्ब प्रबोधन, आत्मनिर्भरता एवं नागरिकों के मूलभूत अधिकार और कर्तव्य इन पांच बिंदुओं पर व्यापक प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि देश को विकास पथ पर अग्रसर करना है तो हमें छुआछूत, जात-पांत के भेदभाव को त्यागना होगा। प्रख्यात साहित्यकार डॉ. तारा दुग्गड़ ने मतदान को राष्ट्रीय दायित्व बताते हुए सभी से मतदान करने की अपील की। कार्यक्रम का कुशल संचालन कल्याण भारती पत्रिका की सह-संपादिका डॉ. रंजना त्रिपाठी ने किया। उद्बोधन गीत श्रीमती शैलजा बियानी ने प्रस्तुत किया। अध्यक्षीय वक्तव्य एवं आभार ज्ञापन जितेन चौधरी ने किया। हावड़ा महानगर अध्यक्ष शंकर लाल हाकिम, कोलकाता महानगर अध्यक्ष जीतेन चौधरी, महानगर महिला समिति अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला बागड़ी मंच पर आसीन रहे। श्रीमती शशि मोदी के मधुर स्वरों में वंदे मातरम् के गायन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। शंकर अग्रवाल, महेश मोदी, संदीप चौधरी, विमल मल्लावत, पवन केजरीवाल, इंदु नाथानी, विवेक चिरानिया, राजेश अग्रवाल, कुसुम सरावगी सहित महानगर के अनेकों विशिष्ट व्यक्तियों की कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता रही। विकास माधोगढ़िया, अरुण मल्लावत, राजीव शरण, केशव गुप्ता, विश्वनाथ पोद्दार आदि गणमान्य अतिथि विशेष रुप से उपस्थित थे। ■

सिलाई प्रशिक्षण एक नए आयाम के साथ

- शकुन्तला बागड़ी, अध्यक्षा, कोलकाता महानगर महिला समिति

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पश्चिम बंगाल के वनवासी बहुल क्षेत्रों से मातृशक्ति कोलकाता के कल्याण भवन में आकर सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त करती है। इसके साथ ही साथ उन्हें कल्याण आश्रम की अन्य योजनाओं से भी अवगत कराया जाता है।

इस बार के सिलाई प्रशिक्षण शिविर (25 जुलाई से 10 अगस्त) की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि प्रशिक्षु बालिकाओं ने अपनी सिलाई की कला को व्यवसाय में परिवर्तित किया।

दृढ़ निश्चय से क्या नहीं होता,
पत्थरों को चीर कर है झरना बहता।

पिछले दो सिलाई प्रशिक्षण वर्गों से हम 50% पैसा लेकर लड़कियों को सिलाई मशीन देने लग गए हैं। इसका परिणाम बहुत अच्छा आ रहा है क्योंकि पहले सीख कर जाने के बाद भी उनको सिलाई के लिए अपने छात्रावास या आसपास कहीं जाना पड़ता था। अब सिर्फ 3000 देकर उनको सिलाई मशीन मिल जाती है। पिछली बार 6 लड़कियों ने मशीन खरीदी थी। इस बार 17 लड़कियों ने खरीदी तो एक बहुत अच्छा अनुभव रहा।

सिलाई प्रशिक्षण का नया आयाम शुरू हुआ है। इस बार जो लड़कियां सिलाई प्रशिक्षण के लिए कल्याण भवन आई थी उनमें से एक अपने गांव में शिशु शिक्षा केंद्र चलाती है। वहाँ की स्वाधीनता दिवस की तस्वीर आप सबके साथ साझा की जा रही है

आसमां भी झुकेगा तेरे पुरुषार्थ के आगे,
यूं जुनून की हद से गुज़रते रहो।
जीवन संघर्ष है लड़ते रहो।। ■

विभिन्न कार्यकर्ता पुरस्कारों से सम्मानित

कल्याण आश्रम के माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत कार्यकर्ताओं का विभिन्न संस्थाओं द्वारा इस वर्ष सम्मान किया गया। जिसमें नागालैंड में अनेक वर्षों तक कल्याण आश्रम का कार्य करने वाले श्री जगदम्बा मल जी को My Home India द्वारा **स्वामी विवेकानन्द कर्मयोगी पुरस्कार**, श्री चैतराम जी पवार को महाराष्ट्र सरकार द्वारा **वन भूषण पुरस्कार**, डॉ लक्ष्मण राव टोपले, डॉ मधुकर आचार्य जी (महाराष्ट्र) को **आदिवासी सेवक पुरस्कार** देकर सम्मानित किया गया। ■

न्यूज़ 18 द्वारा अचम्मा जी का सम्मान

CNN - न्यूज़ 18 टीवी नेटवर्क द्वारा आयोजित Rising India She Shakti यह एक विशेष कार्यक्रम नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में वनवासी कल्याण आश्रम की आंध्र प्रदेश प्रांत की महिला प्रमुख श्रीमती अचम्मा जी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अचम्मा जी ने श्रीराम का एक सुंदर तेलुगू भजन सुना कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस कार्यक्रम में जनजाति क्षेत्र में कार्यरत वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीमती बुधरी ताती और पद्मश्री भूरी बाई को भी सम्मानित किया गया। ■

नैपुण्य शिविर

- संजय रस्तोगी, मंत्री, दक्षिण बंग प्रान्त

पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता-हावड़ा महानगर के समस्त कार्यकर्ताओं को और भी अधिक प्रखर और तेजस्वी बनाने के लिए कल्याण भवन में 24-25 अगस्त 2024 को नैपुण्य शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में कोलकाता हावड़ा महानगर के लगभग 95 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। यह शिविर 7 सत्रों बाँटा गया था।

प्रथम सत्र में अखिल भारतीय युवा प्रमुख श्री बैभव सुरंगे ने संबोधित करते हुए कहा कि अभ्यास वर्ग का यह सत्र बौद्धिक न होकर अपनों से अपनी बात है। कोलकाता-हावड़ा महानगर के कार्य एवं कार्यकर्ताओं के समर्पण की सराहना करते हुए आपने कहा कि संगठन को मजबूत बनाए बिना कुछ नहीं हो सकता। विरोधियों के प्रश्न पूछने पर उन्हें अपने कार्य से उत्तर देना है। द्वितीय सत्र में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ दक्षण बंग के प्रांत प्रचारक प्रमुख श्री प्रशांत भट्ट ने बताया कि 2025 में संघ अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है। हमने समाज परिवर्तन के लिये पाँच बिन्दु - कुटुम्ब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, आत्मनिर्भरता एवं नागरिकों के मूलभूत अधिकार और कर्तव्य निर्धारित किए हैं। आपने पांचों ही बिंदुओं पर मार्मिक प्रकाश डाला शिविर के दोनों दिन गटश: बैठकें हुई। जिसमें कार्यकर्ताओं के मन में उठने वाले प्रश्नों का समाधान ढूँढा गया। कार्यकर्ताओं ने अभिनय के माध्यम से नये व्यक्तियों से सम्पर्क करने की कला बताई।

शिविर के समापन सत्र में अखिल भारतीय युवा प्रमुख वैभव जी सुरंगे ने संबोधित किया। अपने संबोधन के माध्यम से वैभव जी ने कार्यकर्तावृन्द में उत्साह भर दिया। इस प्रकार नैपुण्य शिविर मनस्वी स्मृतियों के साथ संपन्न हुआ। ■

नैपुण्य शिविर में जाना हम सबने...

- सीमा केडिया, लेकटाउन महिला समिति

नैपुण्य शिविर में जाना हम सबने,
कार्य में लायें कैसे और निपुणता।
'तू मैं एक रक्त' का करें ध्येय घोष,
अमीर गरीब का भेद भुला रखें समता।

कर सम्पर्क सभी ग्राम नगर जाकर,
स्वावलंबी बनने की दें उन्हें सीख।
मुख्य धारा से करें जोड़ने की कोशिश,
कर बदलाव इतिहास एक नया लिख।

जनजाति का धर्मान्तरण रोकने हेतु,
विदेशियों से पहले अपने वहाँ पहुँचे।
उनकी सुख सुविधाओं की करें पूर्ति,
विभिन्न सहयोग कर करें सपने ऊँचे।

बनायें समन्वय सभी कार्यकर्ताओं,
अधिकारियों और मंत्रियों के बीच,
सहजता और शालीनता रखें सभी,
मतभेद की कोई लकीर मत खींच।

सोशल मीडिया का कर सदुपयोग,
आश्रम की सेवा-भाव का करें प्रचार।
डरना ,झुकना नहीं, एकजुट होकर,
बनानी है उनकी जिंदगी खुशगवार।

राष्ट्र भक्ति और प्रेम की भावना के साथ,
सेवा और सहयोग का रखें विचार।
कल्याण आश्रम से जुड़े और जोड़ें
दें ग्रामवासियों को उत्तम संस्कार। ■

सिंधारा उत्सव

- निर्मला लाहोटी, कोलकाता महानगर सेवापात्र प्रमुख

बागों में पड़ गये झूलें, गूंजे गीतों की शहनाई।
आमों के पेड़ों पर फिर, कोयल है मुस्काई।।
खिल रहा है हर चेहरा, हरियाली है छाई।
सावन के मौसम में, जब सिंधारा तीज है आई।।

सिंधारा हरियाली तीज का पर्व मुख्य रूप से उत्तर भारत में धूमधाम के साथ मनाया जाता है। यह उत्सव मुख्यतः राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड में मनाया जाता है। श्रृंगार का यह पर्व नागपंचमी के दो दिन पूर्व यानी श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को आता है। यह पर्व भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित है। सिंधारा तीज का पर्व माता पार्वती और भगवान शिव के पुनर्मिलन का प्रतीक है। इस दिन बहनें माता पार्वती की पूजा-अर्चना करती हैं और सुखद जीवन की कामना करती हैं।

सिंधारा श्रृंगार दिवस है। इस दिन महिलाएँ सजती संवरती हैं, झूला झूलती हैं और लोकगीत गाती हैं। स्त्रियां समूह गीत गाकर झूला झूलती हैं।

जैसा कि सर्वविदित है सिंधारा का यह त्यौहार भगवान शिव और माँ पार्वती के मिलन का प्रतीक है।

तो भगवान शिव और पार्वती के इसी शाश्वत मिलन को पूर्वांचल कल्याण आश्रम की महिला कार्यकर्तावृन्द प्रतिवर्ष सिंधारा के रूप में आयोजन करती है। पूर्वांचल कल्याण आश्रम का सिंधारा इस बार 10 अगस्त को कल्याण भवन, मानिकतला में आयोजित किया गया।

झूले पड़ गए थे। सज गयी थी झूलों की डोरियाँ। महक उठी थी गलियाँ। माँ पार्वती सरीखी सखियाँ हरी चूनर में पधारी। मोगरे और चमेली की सुगंध तन और मन को आह्लादित करने लगी। कोलकता हावड़ा महानगर की कार्यकर्ता सखियों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

मनोरम नृत्य की मनोहर छवियाँ अवर्णनीय हो उठी। ढोलक के थाप पर गीतों की मधुर श्रावणी धुन हृदय के तारों को झंकृत करने लगी। सामाजिक विसंगतियों पर सखियों का एकाकी मंचन मंत्रमुग्ध करने वाला था। सावन की हरियाली सा सभामंडप सजाया था सखियों ने। न उम्र का बंधन था न ही उत्साह की कोई सीमा थी। प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत की पंक्तियाँ सिंधारा के उत्सव को और भी पुलकित करती हैं।

रिमझिम रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,
रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अंतर!
धाराओं पर धाराएँ झरतीं धरती पर,
रज के कण कण में तृण तृण की पुलकावलि भर। ■

प्रेम और एकता का उत्सव: रक्षाबंधन

- निर्मला केजरीवाल, मंत्री महानगर महिला समिति

इस वर्ष कोलकाता हावड़ा महानगर की महिला कार्यकर्तावृन्द ने 1,30,000 राखियों को वनवासी गाँवों में भेजने का बीड़ा उठाया। कुछ राखियाँ महिला कार्यकर्ताओं ने बनाई और कुछ संग्रह की गई। दक्षिण बंगाल के 14 जिलों में जहां अपना कार्य है कार्यकर्ताओं ने गांव गांव घर-घर जाकर राखी बांधी।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि रक्षाबंधन का पर्व प्यार और एकता का पर्व है।कल्याण आश्रम भी रक्षाबंधन उत्सव के माध्यम से जन-जन को एक सूत्र में पिरोने की अहं भूमिका निभाता है।

कार्यकर्ताओं के द्वार द्वार पहुँचते ही प्रत्येक घर के हर सदस्य ने पहले तो स्वयं राखियाँ बँधवाई। तत्पश्चात ग्रामवासी भी निकल पड़े एक दूसरे को प्रेम और विश्वास की डोर में बाँधने। हर गाँव में अद्भुत और अकल्पनीय दृश्य था। हर कलाई एक दूसरी कलाई को प्रेम की डोर में बाँध रही थी।

अगले वर्ष पुन: मिलने की कामना से सभी एक दूसरे को नम आँखों से विदाई दे रहे थे। कोलकाता के कल्याण भवन में भी महिला समिति की बहनों ने जाकर कार्यकर्ताओं और अधिकारियों को राखी बाँधी और मुँह मीठा करवाया। ■

राखी मेला 2024

- शकुन्तला अग्रवाल, पूर्व क्षेत्र महिला प्रमुख

प्रतिवर्ष रक्षाबंधन उत्सव के आगमन का संकेत मिलते ही कल्याण आश्रम की लेकटाउन महिला समिति की कार्यकर्तावृन्द वनवासी भाई बहनों के सर्वांगीण विकास हेतु राखी मेला का आयोजन करती हैं।

इस बार भी त्रिदवसीय राखी मेला का आयोजन गोकुल बैंक्वेट में 25 जुलाई से 27 जुलाई तक हुआ। प्रसिद्ध दंत चिकित्सक डॉ सुनीता बथवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में मेले की शोभा बढ़ाई और अपने करकमलों से मेले का उद्घाटन किया। आपने अपने संबोधन में वनवासी समाज के लिए कल्याण आश्रम द्वारा किए जा रहे कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

मेले में पहले दिन से लेकर तीसरे दिन तक बहुत भीड़ रही। इस 'राखी मेला' में खूबसूरत राखियाँ, आकर्षक गिफ्ट, नारियल-गट, भगवान की पोशाक, सलवार सूट, चद्दर, तौलिया, नाईट सूट, पर्स, डेकोरेटिव शो-पीस, मोमबती, बच्चों की स्टेशनरी, कॉस्मेटिक सामान, चूरन-सुपारी आदि आदि अनेक वस्तुएँ भी थीं। साथ ही घर के बने पापड़ मंगोड़ी, मसाले, शहद, इमली आदि घरेलू सामान भी उपलब्ध थे। यह राखी मेला वनों में रहने वाले 12 करोड़ वन बधुओं को समर्पित था। ■

अनुकरणीय

- तारा माहेश्वरी, गोवा बागान महिला समिति

अनुकरणीय स्तंभ में लेखनी सार्थक हो जाती है जब याद आता है जैन समाज के प्रकाश स्तंभ का नाम सरदारमल जी कांकरिया का। 90 वर्षीय किंतु उत्साह और कर्मठता में युवाओं को भी मात देने वाले। कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता की ओर से यदि विलम्ब हो जाए तो आप स्वयं फोन करके संपर्क करके कार्यकर्ता को याद दिलाते हैं कि वनवासी समाज के लिए उनसे कोई कुछ लेने नहीं आया। समर्पण की यह अजस्र धारा आज से नहीं लगातार कई वर्षों से अनवरत बह रही है। इस बार भी स्वयं फोन करके याद दिलाया कि कल्याण आश्रम के कोष में 10 सिलाई मशीनें जोड़ना चाहते हैं। वयोवृद्ध होते हुए भी स्वयं याद करके वनवासियों के लिये सिलाई मशीन भेजना आपकी उदारता और निष्ठा का परिचायक है। कल्याण आश्रम परिवार आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है।

वंदन अभिनंदन करे, धरा और आकाश
दानवीरता आपकी, जग में है विख्यात।

● प्रत्येक धर्म यह कहता है कि हर व्यक्ति को अपनी आय का कुछ हिस्सा दान अवश्य करना चाहिए। चाहे कोई व्यक्ति कम धन अर्जित करे या ज्यादा, अपनी हैसियत के अनुसार दान करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। आज अधिकतर लोगों में दान देने की भावना घट रही है। इसके साथ ही जो संपन्न व वैभवशाली लोग दान कर रहे हैं, उनमें से अनेक लोगों की भावना भी दान पर केंद्रित न होकर दान के प्रचार या दो टूक शब्दों में कहें तो इस पुण्य कृत्य के विज्ञापन पर रहती है। ऐसे समाज के बीच एक व्यक्तित्व संजू दास का भी है जो दिन रात घरों में काम करके भी अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को नहीं भूलती। श्री विमल मल्लावत जी के परिवार में घरेलू सहायिका के रूप में नियुक्त हैं संजू जी। कठिन परिश्रम से अर्जित की हुई धनराशि से वनवासी भाई-बहनों के जीवन को सुविधा संपन्न बनाने के लिए आप प्रतिवर्ष एक विद्यार्थी के लिए सहयोग राशि देती हैं। इसके अतिरिक्त वनवासी गाँवों में जलाशय निर्माण के लिए 30,000 हजार रुपए दिए। संजू जी के प्रेरणास्पद कार्य से हम सभी को सीखने की आवश्यकता है। कल्याण आश्रम परिवार संजू जी के प्रति आभार व्यक्त करता है।

● दानवीरों के यशोगान से भारत के इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। सामाजिक कार्य के लिये जब भी आवश्यकता होती है समाज बंधु आगे आकर पुण्य कार्यों में सहयोग करते हैं। ऐसा ही कुछ हुआ बागमुंडी छात्रावास के निर्माण यात्रा के समय। पहले तो बाग़मुंडी छात्रावास निर्माण हेतु अधिक मास में आयोजित शिवपुराण कथा के श्रोताओं ने अपनी दानपेटी खोल दी। फिर धीरे धीरे दानदाताओं की संख्या बढ़ने लगी। इसी कड़ी में अलीपुर समिति की कार्यकर्ता श्रीमती सरोज मीमानी ने छात्रावास को सुविधासम्पन्न बनने के लिए 10 सीलिंग पंखे दानस्वरूप पूर्वांचल कल्याण आश्रम के कार्यालय में भिजवाए। सरोज मीमानी अपने बीच सरोज भाभी के नाम से ज्यादा जानी जाती हैं। सरोज भाभी, कल्याण आश्रम परिवार आपके प्रति अपना आभार व्यक्त करता है। ■

बोधकथा

परोपकार

एक बार महाराजा रणजीत सिंह जंगल से लौट रहे थे। एकाएक सामने से एक ईंट आकर उन्हें लगी। सिपाहियों ने चारों ओर नजर दौड़ाई तो उन्हें एक बुढिया दिखाई दी। सिपाही उसे तुरंत गिरफ्तार कर महाराज के सामने ले आए। बुढ़िया महाराज को देखते ही भयभीत हो गई। वह कांपते हुए बोली- 'महाराज मेरा बच्चा बहुत भूखा था।' घर में खाने को कुछ भी नहीं था। इसलिए पेड़ पर पत्थर मार कर कुछ फल तोड़ रही थी किंतु दुर्भाग्यवश एक पत्थर आपको लग गया। मैं निर्दोष हूं। यह मैंने जानबूझकर नहीं किया।

महाराज ने कुछ विचार कर आदेश दिया कि बुढ़िया माई को 1,000 रुपये देकर सम्मानपूर्वक छोड़ दिया जाए। महाराज के इस आदेश को सुनकर सभी सभासद् स्तब्ध रह गये। तब एक मंत्री ने संकोच करते हुए पूछा; 'महाराज जिसे दंड मिलना चाहिए उसे आप सम्मान दे रहे हैं।' तब महाराज रणजीत सिंह बोले यदि वृक्ष पत्थर लगने पर मीठा फल दे सकते हैं तो मैं इस दरिद्र बुढिया को खाली हाथ कैसे लौटा सकता हूं? परोपकार करना हमें पेड़ों से सीखना चाहिए। ■

अमृत वचन

जिस विद्या में कर्म की शक्ति नहीं, स्वतंत्र रूप से सोचने की बुद्धि नहीं, खतरा उठाने की प्रवृत्ति नहीं वह विद्या निस्तेज है।

कविता

वनवासी के बीच राम

- ल. जे. हर्षे

स्नेह सूत्र में बंध कर देखो, खिल जायेगा मन।

वनवासी के बीच कहीं भी ढूंढ़ो राम मिलेगा।
निषाद सहता विषाद होगा, केवट नाव गहेगा।
शबरी के जूठे बेरों में होंगे स्वागत क्षण।।
स्नेह सूत्र...

एकलव्य भी यहीं कहीं पर धनुष चढ़ाता होगा।
प्रतिमा को गुरू द्रोण मानकर शीश झुकाता होगा।
स्वर-भेदी के पीछे सफल साधना अनुपम।।
स्नेह सूत्र...

नारायण का धैर्य पराक्रम दुर्गा का अवतार यहीं।
गोंड वंश के परम्परा की गौरव गाथा गूंज रही।
मदन महल के पत्थर गाते समर नाद सरगम।।
स्नेह सूत्र...

हल्दी घाटी में केसरिया रंग अभी भी छाया।
राणा का रण-प्रताप कौशल घर घर यहाँ समाया।
चेतक जैसे उछल रहे हैं भीलों के तन-मन।।
स्नेह सूत्र...

यहाँ मावले, वीर शिवाजी, जो जूझे दुश्मन से।
अंधकार में मार्ग दिखाते जो चमके बिजली से।
कहां मिलेंगे जग में ऐसे पूर्ण समर्पित मन।।
स्नेह सूत्र...

बिरसा मुंडा ने तेजस्वी जो इतिहास बनाया।
देश धर्म की बलिवेदी पर अपना प्राण चढ़ाया।
संकट पर हम मान करेंगे जीतेंगे यह रण।।
स्नेह सूत्र... ■

नैपुण्य शिविर की झलकियाँ

कोलकाता के नैपुण्य शिविर में उत्साहवर्धक सत्र हुये;
कार्यकर्ताओं को बैठक में योजनाओं के अर्थ मिले।

रक्षा बंधन उत्सव २०२४

देश हमारा रहे सुरक्षित, खुद से करते वादा है;
वनबंधु की कलाई पर रक्षा-सूत्र को बाँधा है।

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com